वर्ष 2018–19

स्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग कुमाँऊ विश्वविद्यालय नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम छः सत्रार्ध में विभाजित है जिसमें प्रत्येक सत्रार्ध में दो प्रश्नपत्र हैं।
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 75 अंक का है जिसमें से 55 अंक लिखित परीक्षा एवं 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 33 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 54 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 13 प्रतिशत (जिसमें दो लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- हिंदी भाषा में दो प्रश्नपत्र हैं जिसमें प्रत्येक प्रश्नपत्र में 55 अंक निर्धारित हैं।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

2018–19

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

स्नातक पाठ्यक्रम (बी.ए.)–हिन्दी भाषा

1. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यवहारिक पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
2. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति जैसे राष्ट्रभाषा व राजभाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
3. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी संपर्क भाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
4. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के कार्यालयी व्यवहार व प्रयोग में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
5. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग की परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिंदी भाषा की आधारभूत व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–प्रथम प्रश्न–पत्र

1. विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिंदी की वाक्य संरचना एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक–प्रति पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–द्वितीय प्रश्नपत्र

1. हिंदी भाषा के उद्‌भव एवं विकास की विस्तृत और समृद्ध परम्परा का ज्ञान होता है।
2. हिन्दी की विभिन्न शैलियों हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होता है जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के काम आता है।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है जिससे वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है।
4. कम्प्यूटर व इण्टरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरम्भिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा का ज्ञान होने से सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता से कर सकता है।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक (बी.ए.)

1. साहित्य मानव समाज की भावनात्मक एवं संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य मानव जीवन की उत्कृष्ट कला होने के कारण समाज का दर्पण कहलाता है। स्नातक स्तर पर साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखण्ड की विसंगतियों एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है जिससे समाज में सुधार आता है।
3. हिन्दी साहित्य के अध्ययन से हिन्दी के समृद्ध साहित्य का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उनमें हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होकर रचनात्मक कौशल का विकास होता है।
5. विद्यार्थी जीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

6. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक स्तर की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी विषय को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने में सफलता प्राप्त होती है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

प्रथम प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की आदिकालीन कविता का ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवि चंदवरदाई, जायसी, तुलसी, सूरदास के व्यक्तित्व–कृतित्व एवं उनकी शिल्पगत विशेषताओं से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी वीरगाथा काव्य का परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी निर्गुण काव्यधारा और संत साहित्य से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा और उसकी दो प्रमुख शाखाओं रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति शाखा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

द्वितीय प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा साहित्य

1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा से परिचित होता है।

2. विद्यार्थी हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

3. विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा के मूलभूत तत्वों, विशेषताओं और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

5.विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से कहानी के तत्वों और उसकी समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

तृतीय प्रश्नपत्र– रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन काव्य के भावपक्ष एवं कलापक्ष से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत शब्दशक्तियों के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

चतुर्थ प्रश्नपत्र–नाटक एवं एकांकी

1. विद्यार्थी नाटक विधा के उद्‌भव ओर विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी नाटक के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित नाटक के आधार पर नाटक की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित एकांकियों के आधार पर एकांकी की तात्विक समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी एकांकी विधा के उद्‌भव और विकास, उसके स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
पंचम् प्रश्नपत्र–द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी के द्विवेदीयुगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की छायावादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।
4. पाठ्यक्रम में संकलित छायावादी कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
षष्ठ प्रश्नपत्र– हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्ध

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध के विभिन्न तत्वों एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध की विभिन्न शैलियों से अवगत होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धकारों के निबन्धों के अध्ययन से उनकी निबन्ध कला से परिचित होता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
सप्तम् प्रश्नपत्र–छायावादोत्तर हिन्दी कविता

1. विद्यार्थी प्रगतिवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रयोगवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी नई कविता के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं के अध्ययन से छायावादोत्तर कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
अष्टम् प्रश्नपत्र–स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप और उसकी विभिन्न विधाओं से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी रेखाचित्र और संस्मरण के मूलभूत अन्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के उद्‌भव से वर्तमान तक की विकास यात्रा से परिचित होता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
नवम् प्रश्नपत्र–प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पत्राचार का ज्ञान प्राप्त कर कार्यालयी एवं व्यावसायिक पत्र लेखन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी प्रारूपण और टिप्पण का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी संक्षेपण और पल्लवन के नियमों और उनके मध्य मूलभूत अंतर से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी भाषा की कम्प्यूटिंग, टाइपिंग, फॉण्ट प्रबन्धन, डाटा प्रोसेसिंग और वर्ड प्रोसेसिंग का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी मीडिया, रेडियो, टी.वी., इण्टरनेट आदि के क्षेत्र में लेखन और सम्पादन संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
दशम् प्रश्नपत्र– लोकसाहित्य

1. विद्यार्थी साहित्य के मौखिक/अलिखित स्वरूप (लोक पक्ष) की मूलभूत जानकारी प्राप्त करते हैं। साथ ही लोकसाहित्य के विभिन्न तत्वों से परिचित होते हैं।
2. विद्यार्थी लोकसाहित्य के विविध आयामों, अध्ययन की विविध प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

3. विद्यार्थी लोक संस्कृति के अंतर्गत लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा और लोकगाथा से सम्बद्ध विभिन्न प्रचलित–अप्रचलित स्वरूपों, उनकी विशिष्टताओं एवं मूलभूत अंतर से परिचित होकर उनके प्रति जागरुकता एवं अभिरुचि उत्पन्न करते हैं।
4. विद्यार्थी लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के संरक्षण हेतु प्रयासरत होते हैं।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध
एकादश प्रश्नपत्र–हिन्दी पत्रकारिता

1. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. विद्यार्थी को सम्पादन कला के विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त होती है।
5. विद्यार्थी पत्रकारिता से जुड़ी विभिन्न लेखन प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी प्रेस संबंधी विभिन्न कानूनों, आचार संहिताओं तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता के दायित्वों का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध
द्वादश प्रश्नपत्र–उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य

1. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की समृद्धि में उत्तराखण्ड के कवियों एवं लेखकों के योगदान से परिचित होते हैं।
3. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
4. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों की विषयगत विविधता और शिल्पगत विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वर्ष 2018–19

परास्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम चार सत्रार्ध में विभाजित है जिनमें से तीन सत्रार्ध में चार प्रश्नपत्र हैं चतुर्थ सत्रार्ध में तीन प्रश्नपत्र एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र मौखिकी परीक्षा पर आधारित है।
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 10 अंक का है जिसमें से 75 अंक लिखित परीक्षा एवं 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 20 प्रतिशत (जिसमें तीन लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcome)
हिन्दी
परास्नातक (एम.ए.)

1. साहित्य मानव जीवन एवं समाज से संबंधित जीवनपर्यन्त घटित होने वाले घटनाचक्रों का एक व्यापक स्त्रोत है। साहित्य समाज को दिशा एवं गति देने का कार्य सजीवता के साथ करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करके अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक एवं सामाजिक गत्यात्मकता को सरलता से पहचानने में सफल होता है।
2. हिन्दी साहित्य अपने प्रारम्भिक काल से भारत के इतिहास में मुस्लिमों के आगमन, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण–सगुण, रीतिकाल, श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक विद्यार्थी इस सुदीर्घ परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. साहित्य समाज का दर्पण है। जहां दर्पण केवल मानव की वाह्य विकृतियां दिखाता है, वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियां और विशेषताओं को चिन्हित करता है। साहित्य सभी बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करके स्वस्थ, सुंदर और आनन्दमयी जीवन की सृष्टि करता है।
4. वर्तमान भौतिकवादी जगत में गिरते हुए जीवन मूल्यों से समाज में जो विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं, साहित्य उन विसंगतियों को दूर करके समाज को सही दिशा देने का कार्य करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर समुन्नत जीवन मूल्यों को आत्मसात कर अपने भावी जीवन का विकास करता है।
5. विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति, परम्पराओं व सामाजिक मूल्यों से परिचित होते है। प्रौद्योगिकी के दौर में साहित्य ही हमें संवेदनशील बना सकता है। आज के मशीनी युग में साहित्य ही हमारे जीवन में मानवीय संवेदनाओं का प्रसार करता है।
6. विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी के अध्ययन से उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए नवीन विचार एवं परिकल्पनाएं प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

परास्नातक हिन्दी–प्रथम सत्रार्द्ध

प्रथम प्रश्नपत्र–आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

1. विद्यार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति 'संदेश रासक' के अध्ययन से आदिकालीन हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराजरासो' के अध्ययन से वीरगाथा काव्य परम्परा के उत्कर्ष रूप से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से हिन्दी की गीतिकाव्य परम्परा और उनकी भक्तिभावना से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कबीर वाणी' का अध्ययन करके कबीर के काव्य सौष्ठव एवं निर्गुण काव्यधारा की सन्त शाखा से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' का अध्ययन करके भक्तिकाव्य में सूफी काव्यधारा का ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और उनकी सौन्दर्य–दृष्टि का ज्ञान प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रश्नपत्र – सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी सगुण काव्यधारा एवं रीतिकालीन काव्यधारा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी सूरदास एवं तुलसीदास की रचनाओं का अध्ययन करके कृष्ण काव्यधारा एवं राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से रीतिकाल की रीतिसिद्ध काव्य परम्परा और उनकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी घनानन्द के काव्य के अध्ययन से घनानन्द के काव्य सौष्ठव के साथ–साथ रीतिमुक्त काव्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।

तृतीय प्रश्नपत्र
भारतीय काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र सम्बन्धी प्रचलित भारतीय अवधारणाओं/मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेदों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य में प्रचलित विभिन्न काव्य सम्प्रदायों एवं उनकी मान्यताओं से अवगत होता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी आलोचना से संबन्धित विभिन्न प्रतिमानों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर प्रमुख आलोचकों एवं उनके कार्य का साक्षात्कार करता है।
5. विद्यार्थी आलोचना के प्रमुख तत्वों तथा आलोचना से समालोचना तक की यात्रा से परिचित होता है।

चतुर्थ प्रश्नपत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास से परिचित होने के साथ–साथ हिन्दी में इतिहास लेखन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी काल विभाजन की प्रक्रिया तथा स्वरूप से परिचित होकर हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रदत्त काल विभाजन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर आदिकालीन कविता के नामकरण का भी अध्ययन करता है।
4. विद्यार्थी आदिकालीन सिद्ध एवं नाथ साहित्य परम्परा एवं स्वरूप से परिचित होकर आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी आदिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत होता है।
6. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

7. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल/रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

परास्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध
पंचम् प्रश्नपत्र–आधुनिक हिन्दी काव्यः छायावाद तक

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी रत्नाकर के काव्य के अध्ययन से भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के स्वरूप एवं रत्नाकर के काव्य सौष्ठव से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नवजागरण काल में खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना के प्रयोग से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी गुप्त कृत 'साकेत' के अध्ययन से रामकथा में उपेक्षित नारी पात्रों से परिचित होता है। साथ ही वह स्त्री के संघर्षों, त्याग और बलिदानों से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त एवं महादेवी वर्मा की कविताओं के अध्ययन से छायावादी काव्यगत प्रवृत्तियों से अवगत होता है।

षष्ठ प्रश्नपत्र – पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाओं एवं मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी प्लेटो की काव्य विषयक मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी अरस्तू की त्रासदी विषयक अवधारणा, अनुकरण एवं विरेचन सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी मैथ्यू आर्नल्ड के कला और नैतिकता के सिद्धान्त तथा क्रोंचे के अभिव्यंजनावादी सिद्धान्त से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी आई0ए0रिचर्ड्स के संप्रेषणीयता के सिद्धांत एवं टी.एस.इलियट के कला की निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त से परिचित होता है।
6. विद्यार्थी अंग्रेजी के कवि वर्ड्सवर्थ के काव्य भाषा के सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना के सिद्धान्त का परिचय प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाराओं–स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तरआधुनिकतावाद का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

सप्तम् प्रश्नपत्र– हिन्दी साहित्य का इतिहासः आधुनिक काल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आधुनिक काल के अंतर्गत साहित्य के विभिन्न आंदोलनों यथा–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद द्वारा समय–समय पर हिन्दी कविता के परिवर्तित स्वरूपों से परिचित होता है। साथ ही विषयगत एवं संरचनागत परिवर्तनों का भी ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आधुनिककालीन विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं से अवगत होता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत गद्य साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न गद्य विधाओं यथा– कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आदि का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं यथा– संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृतान्त, फीचर, डायरी, रिपार्ताज आदि का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

अष्टम् प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य

1. विद्यार्थी हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास, कहानी) एवं नाटक साहित्य के उद्‌भव और विकास यात्रा से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी कथा एवं नाटक साहित्य के विभिन्न तत्वों और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी 'गोदान' उपन्यास के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक जीवन की विषमताओं, भारतीय कृषक की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी सामाजिक शोषकों द्वारा किए गए अत्याचारों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कगार की आग' उपन्यास के अध्ययन से पहाड़ की दलित, शोषित महिलाओं पर होने वाले शोषण और दुर्व्यवहार और उनकी आंतरिक और बाह्य पीड़ाओं से परिचित होते हैं।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी की विकास यात्रा एवं उसके शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी पाठय्क्रम में संकलित नाटक 'स्कंदगुप्त' तथा 'लहरों के राजहंस' के अध्ययन से रंगमंच विधा एवं नाट्य परम्परा के विकास से परिचित होता है।

परास्नातक – तृतीय सत्रार्द्ध

नवम् प्रश्नपत्र – आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर

1. विद्यार्थी 'उर्वशी' काव्य के अध्ययन से दिनकर की रचनाधर्मिता का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रचीन कथानक के माध्यम से नारी की दुविधाग्रस्त चेतना एवं भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिवादी काव्यधारा से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता का ज्ञान प्राप्त करता है।

दशम् प्रश्नपत्र – भाषा विज्ञान

1. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अध्ययन से भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा–व्यवस्था, भाषा–व्यवहार के महत्व एवं परिचय का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की प्रमुख शाखाओं स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी भाषा की विशेषताओं और भाषाविज्ञान के क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी भाषा विज्ञान के अध्ययन से साहित्य में भाषा विज्ञान की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

एकादश प्रश्नपत्र–निबन्ध एवं स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव एवं विकास से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धों के अध्ययन से प्रमुख निबन्धकारों के परिचय एवं उनकी गद्य शैली से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप एवं उसके उद्‌भव–विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय एवं उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं से अवगत होता है।

द्वादश प्रश्नपत्र– हिन्दी भाषा

1. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाओं और बोलियों से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी के भाषिक स्वरूप यथा – शब्द रचना, रूप रचना, वाक्य रचना, पद क्रम और अन्विति का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और वर्तमान विश्व में हिन्दी के महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की तकनीकी जानकारी प्राप्त करता है।

परास्नातक–चतुर्थ सत्रार्द्ध

त्रयोदश प्रश्नपत्र (क)–कुमाउनी साहित्य

1. विद्यार्थी कुमाउनी साहित्य के उद्भव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'पछ्याण' और 'इजा' नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'मन्याडर' पुस्तक के अध्ययन से कुमाउनी कहानी के कथ्य एवं शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठय्क्रम में सम्मिलित पुस्तक 'मन्खि' के अध्ययन से कुमाउनी निबन्ध का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक 'आपण पन्यार' के अध्ययन से कुमाउनी नाटक के रचनात्मक एवं शिल्पगत सौष्ठव से परिचित होता है।

चतुर्दश प्रश्नपत्र (क)– लोक साहित्य

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के अध्ययन से लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।

2. विद्यार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्संबन्धों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी लोक साहित्य के अध्ययन की प्रक्रिया एवं संकलन में आने वाली समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों एवं उनकी विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत प्रकीर्ण साहित्य का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

पंचदश प्रश्नपत्र (घ) विशिष्ट अध्ययन : सूरदास

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित सूरदास के पदों के अध्ययन से सूर के वात्सल्य वर्णन से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी सूर के पदों के अध्ययन से सूर की श्रृंगारिकता एवं भक्ति भावना का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी सूरदास के पदों के अध्ययन से पुष्टिमार्ग की मूलभूत अवधारणा से अवगत होता है।

मौखिकी

1. विद्यार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।
2. विद्यार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

शोध कार्य पी–एच.डी. हिंदी

1. शोधार्थी अपनी पूर्ण अकादमिक योग्यताओं के साथ उच्च स्तरीय शोध करने का अवसर प्राप्त करता है।
2. शोधार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. शोधार्थी व्याख्यात्मक शोध, क्षेत्रीय भाषाओं, साहित्य, साहित्येतिहास, ऐतिहासिक पुनर्लेखन एवं तुलनात्मक शोध का सैद्धातिंक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शोधार्थी अपने क्षेत्र, समाज और राष्ट्र हित में उच्चकोटि एवं उद्देश्यपूर्ण शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

वर्ष 2019–20

स्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम छः सत्रार्ध में विभाजित है जिसमें प्रत्येक सत्रार्ध में दो प्रश्नपत्र हैं
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 75 अंक का है जिसमें से 55 अंक लिखित परीक्षा एवं 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 33 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 54 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 13 प्रतिशत (जिसमें दो लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- सत्र् 2019–20 से हिंदी भाषा में प्रथम सत्रार्ध में प्रथम प्रश्नपत्र एवं द्वितीय सत्रार्ध में द्वितीय प्रश्नपत्र निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्नपत्र का अधिकतम अंक 70 है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

स्नातक पाठ्यक्रम (बी.ए.)–हिन्दी भाषा

1. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यवहारिक पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
2. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति जैसे राष्ट्रभाषा व राजभाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
3. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी संपर्क भाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
4. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के कार्यालयी व्यवहार व प्रयोग में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
5. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग की परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिंदी भाषा की आधारभूत व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–प्रथम प्रश्न–पत्र

1. विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिंदी की वाक्य संरचना एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक–प्रति पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–द्वितीय प्रश्नपत्र

1. हिंदी भाषा के उद्‌भव एवं विकास की विस्तृत और समृद्ध परम्परा का ज्ञान होता है।
2. हिन्दी की विभिन्न शैलियों हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होता है जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के काम आता है।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है जिससे वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है।
4. कम्प्यूटर व इण्टरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरम्भिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा का ज्ञान होने से सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता से कर सकता है।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक (बी.ए.)

1. साहित्य मानव समाज की भावनात्मक एवं संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य मानव जीवन की उत्कृष्ट कला होने के कारण समाज का दर्पण कहलाता है। स्नातक स्तर पर साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखण्ड की विसंगतियों एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है जिससे समाज में सुधार आता है।
3. हिन्दी साहित्य के अध्ययन से हिन्दी के समृद्ध साहित्य का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उनमें हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होकर रचनात्मक कौशल का विकास होता है।
5. विद्यार्थी जीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
6. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक स्तर की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी विषय को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने में सफलता प्राप्त होती है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

प्रथम प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की आदिकालीन कविता का ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवि चंदवरदाई, जायसी, तुलसी, सूरदास के व्यक्तित्व–कृतित्व एवं उनकी शिल्पगत विशेषताओं से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी वीरगाथा काव्य का परिचय प्राप्त करता है।

4. विद्यार्थी निर्गुण काव्यधारा और संत साहित्य से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा और उसकी दो प्रमुख शाखाओं रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति शाखा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

द्वितीय प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा साहित्य

1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा से परिचित होता है।

2. विद्यार्थी हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

3. विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा के मूलभूत तत्वों, विशेषताओं और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

5.विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से कहानी के तत्वों और उसकी समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

तृतीय प्रश्नपत्र– रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन काव्य के भाव पक्ष एवं कला पक्ष से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत शब्दशक्तियों के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

चतुर्थ प्रश्नपत्र–नाटक एवं एकांकी

1. विद्यार्थी नाटक विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी नाटक के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित नाटक के आधार पर नाटक की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित एकांकियों के आधार पर एकांकी की तात्विक समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी एकांकी विधा के उद्‌भव और विकास, उसके स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
पंचम् प्रश्नपत्र–द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी के द्विवेदीयुगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की छायावादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।
4. पाठ्यक्रम में संकलित छायावादी कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
षष्ठ प्रश्नपत्र– हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्ध

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध के विभिन्न तत्वों एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध की विभिन्न शैलियों से अवगत होता है।

5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धकारों के निबन्धों के अध्ययन से उनकी निबन्ध कला से परिचित होता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
सप्तम् प्रश्नपत्र–छायावादोत्तर हिन्दी कविता

1. विद्यार्थी प्रगतिवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रयोगवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी नई कविता के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं के अध्ययन से छायावादोत्तर कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
अष्टम् प्रश्नपत्र–स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप और उसकी विभिन्न विधाओं से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी रेखाचित्र और संस्मरण के मूलभूत अन्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के उद्‌भव से वर्तमान तक की विकास यात्रा से परिचित होता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
नवम् प्रश्नपत्र–प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पत्राचार का ज्ञान प्राप्त कर कार्यालयी एवं व्यावसायिक पत्र लेखन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी प्रारूपण और टिप्पण का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी संक्षेपण और पल्लवन के नियमों और उनके मध्य मूलभूत अंतर से परिचित होता है।

5. विद्यार्थी भाषा की कम्प्यूटिंग, टाइपिंग, फॉण्ट प्रबन्धन, डाटा प्रोसेसिंग और वर्ड प्रोसेसिंग का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी मीडिया, रेडियो, टी.वी., इण्टरनेट आदि के क्षेत्र में लेखन और सम्पादन संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध

दशम् प्रश्नपत्र– लोकसाहित्य

1. विद्यार्थी साहित्य के मौखिक/अलिखित स्वरूप (लोक पक्ष) की मूलभूत जानकारी प्राप्त करते हैं। साथ ही लोकसाहित्य के विभिन्न तत्वों से परिचित होते हैं।
2. विद्यार्थी लोकसाहित्य के विविध आयामों, अध्ययन की विविध प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
3. विद्यार्थी लोक संस्कृति के अंतर्गत लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा और लोकगाथा से सम्बद्ध विभिन्न प्रचलित–अप्रचलित स्वरूपों, उनकी विशिष्टताओं एवं मूलभूत अंतर से परिचित होकर उनके प्रति जागरुकता एवं अभिरुचि उत्पन्न करते हैं।
4. विद्यार्थी लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के संरक्षण हेतु प्रयासरत होते हैं।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध

एकादश प्रश्नपत्र–हिन्दी पत्रकारिता

1. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. विद्यार्थी को सम्पादन कला के विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त होती है।
5. विद्यार्थी पत्रकारिता से जुड़ी विभिन्न लेखन प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी प्रेस संबंधी विभिन्न कानूनों, आचार संहिताओं तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता के दायित्वों का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध

द्वादश प्रश्नपत्र–उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य

1. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की समृद्धि में उत्तराखण्ड के कवियों एवं लेखकों के योगदान से परिचित होते हैं।

3. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
4. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों की विषयगत विविधता और शिल्पगत विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वर्ष 2019–20

परास्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम चार सत्रार्ध में विभाजित है जिनमें से तीन सत्रार्ध में चार प्रश्नपत्र हैं चतुर्थ सत्रार्ध में तीन प्रश्नपत्र एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र मौखिकी परीक्षा पर आधारित है।
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 100 अंक का है जिसमें से 75 अंक लिखित परीक्षा एवं 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 20 प्रतिशत (जिसमें तीन लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcome)

हिन्दी

परास्नातक (एम.ए.)

1. साहित्य मानव जीवन एवं समाज से संबंधित जीवनपर्यन्त घटित होने वाले घटनाचक्रों का एक व्यापक स्त्रोत है। साहित्य समाज को दिशा एवं गति देने का कार्य सजीवता के साथ करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करके अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक एवं सामाजिक गत्यात्मकता को सरलता से पहचानने में सफल होता है।
2. हिन्दी साहित्य अपने प्रारम्भिक काल से भारत के इतिहास में मुस्लिमों के आगमन, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण–सगुण, रीतिकाल, श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक विद्यार्थी इस सुदीर्घ परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. साहित्य समाज का दर्पण है। जहां दर्पण केवल मानव की वाह्य विकृतियां दिखाता है, वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियां और विशेषताओं को चिन्हित करता है। साहित्य सभी बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करके स्वस्थ, सुंदर और आनन्दमयी जीवन की सृष्टि करता है।
4. वर्तमान भौतिकवादी जगत में गिरते हुए जीवन मूल्यों से समाज में जो विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं, साहित्य उन विसंगतियों को दूर करके समाज को सही दिशा देने का कार्य करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर समुन्नत जीवन मूल्यों को आत्मसात कर अपने भावी जीवन का विकास करता है।
5. विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति, परम्पराओं व सामाजिक मूल्यों से परिचित होते है। प्रौद्योगिकी के दौर में साहित्य ही हमें संवेदनशील बना सकता है। आज के मशीनी युग में साहित्य ही हमारे जीवन में मानवीय संवेदनाओं का प्रसार करता है।
6. विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी के अध्ययन से उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए नवीन विचार एवं परिकल्पनाएं प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

परास्नातक हिन्दी–प्रथम सत्रार्द्ध
प्रथम प्रश्नपत्र–आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

1. विद्यार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति 'संदेश रासक' के अध्ययन से आदिकालीन हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराजरासो' के अध्ययन से वीरगाथा काव्य परम्परा के उत्कर्ष रूप से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से हिन्दी की गीतिकाव्य परम्परा और उनकी भक्तिभावना से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कबीर वाणी' का अध्ययन करके कबीर के काव्य सौष्ठव एवं निर्गुण काव्यधारा की सन्त शाखा से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' का अध्ययन करके भक्तिकाव्य में सूफी काव्यधारा का ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और उनकी सौन्दर्य–दृष्टि का ज्ञान प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रश्नपत्र – सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी सगुण काव्यधारा एवं रीतिकालीन काव्यधारा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी सूरदास एवं तुलसीदास की रचनाओं का अध्ययन करके कृष्ण काव्यधारा एवं राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से रीतिकाल की रीतिसिद्ध काव्य परम्परा और उनकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी घनानन्द के काव्य के अध्ययन से घनानन्द के काव्य सौष्ठव के साथ–साथ रीतिमुक्त काव्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।

तृतीय प्रश्नपत्र– भारतीय काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र सम्बन्धी प्रचलित भारतीय अवधारणाओं/मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेदों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।

3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य में प्रचलित विभिन्न काव्य सम्प्रदायों एवं उनकी मान्यताओं से अवगत होता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी आलोचना से संबन्धित विभिन्न प्रतिमानों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर प्रमुख आलोचकों एवं उनके कार्य का साक्षात्कार करता है।
5. विद्यार्थी आलोचना के प्रमुख तत्वों तथा आलोचना से समालोचना तक की यात्रा से परिचित होता है।

चतुर्थ प्रश्नपत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास से परिचित होने के साथ–साथ हिन्दी में इतिहास लेखन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी काल विभाजन की प्रक्रिया तथा स्वरूप से परिचित होकर हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रदत्त काल विभाजन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर आदिकालीन कविता के नामकरण का भी अध्ययन करता है।
4. विद्यार्थी आदिकालीन सिद्ध एवं नाथ साहित्य परम्परा एवं स्वरूप से परिचित होकर आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी आदिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत होता है।
6. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल/रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

परास्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

पंचम् प्रश्नपत्र–आधुनिक हिन्दी काव्यः छायावाद तक

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी रत्नाकर के काव्य के अध्ययन से भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के स्वरूप एवं रत्नाकर के काव्य सौष्ठव से परिचित होता है।

3. विद्यार्थी नवजागरण काल में खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना के प्रयोग से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी गुप्त कृत 'साकेत' के अध्ययन से रामकथा में उपेक्षित नारी पात्रों से परिचित होता है। साथ ही वह स्त्री के संघर्षों, त्याग और बलिदानों से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त एवं महादेवी वर्मा की कविताओं के अध्ययन से छायावादी काव्यगत प्रवृत्तियों से अवगत होता है।

षष्ठ प्रश्नपत्र – पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाओं एवं मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी प्लेटो की काव्य विषयक मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी अरस्तू की त्रासदी विषयक अवधारणा, अनुकरण एवं विरेचन सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी मैथ्यू आर्नल्ड के कला और नैतिकता के सिद्धान्त तथा क्रोंचे के अभिव्यंजनावादी सिद्धान्त से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी आई0ए0रिचर्ड्स के संप्रेषणीयता के सिद्धांत एवं टी0एस0इलियट के कला की निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त से परिचित होता है।
6. विद्यार्थी अंग्रेजी के कवि वर्ड्सवर्थ के काव्य भाषा के सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना के सिद्धान्त का परिचय प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाराओं–स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तरआधुनिकतावाद का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

सप्तम् प्रश्नपत्र– हिन्दी साहित्य का इतिहासः आधुनिक काल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आधुनिक काल के अंतर्गत साहित्य के विभिन्न आंदोलनों यथा–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद द्वारा समय–समय पर हिन्दी कविता के परिवर्तित स्वरूपों से परिचित होता है। साथ ही विषयगत एवं संरचनागत परिवर्तनों का भी ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आधुनिककालीन विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं से अवगत होता है।

4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत गद्य साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न गद्य विधाओं यथा– कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आदि का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं यथा– संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृतान्त, फीचर, डायरी, रिपार्ताज आदि का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

अष्टम् प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य

1. विद्यार्थी हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास, कहानी) एवं नाटक साहित्य के उद्‌भव और विकास यात्रा से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी कथा एवं नाटक साहित्य के विभिन्न तत्वों और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी 'गोदान' उपन्यास के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक जीवन की विषमताओं, भारतीय कृषक की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी सामाजिक शोषकों द्वारा किए गए अत्याचारों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कगार की आग' उपन्यास के अध्ययन से पहाड़ की दलित, शोषित महिलाओं पर होने वाले शोषण और दुर्व्यवहार और उनकी आंतरिक और बाह्य पीड़ाओं से परिचित होते हैं।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी की विकास यात्रा एवं उसके शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी पाठय्क्रम में संकलित नाटक 'स्कंदगुप्त' तथा 'लहरों के राजहंस' के अध्ययन से रंगमंच विधा एवं नाट्य परम्परा के विकास से परिचित होता है।

परास्नातक – तृतीय सत्रार्द्ध

नवम् प्रश्नपत्र – आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर

1. विद्यार्थी 'उर्वशी' काव्य के अध्ययन से दिनकर की रचनाधर्मिता का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रचीन कथानक के माध्यम से नारी की दुविधाग्रस्त चेतना एवं भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिवादी काव्यधारा से परिचित होता है।

4. विद्यार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता का ज्ञान प्राप्त करता है।

दशम् प्रश्नपत्र – भाषा विज्ञान

1. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अध्ययन से भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा–व्यवस्था, भाषा–व्यवहार के महत्व एवं परिचय का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की प्रमुख शाखाओं स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी भाषा की विशेषताओं और भाषाविज्ञान के क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी भाषा विज्ञान के अध्ययन से साहित्य में भाषा विज्ञान की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

एकादश प्रश्नपत्र–निबन्ध एवं स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव एवं विकास से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धों के अध्ययन से प्रमुख निबन्धकारों के परिचय एवं उनकी गद्य शैली से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप एवं उसके उद्‌भव–विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय एवं उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं से अवगत होता है।

द्वादश प्रश्नपत्र– हिन्दी भाषा

1. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाओं और बोलियों से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी के भाषिक स्वरूप यथा – शब्द रचना, रूप रचना, वाक्य रचना, पद क्रम और अन्विति का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और वर्तमान विश्व में हिन्दी के महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की तकनीकी जानकारी प्राप्त करता है।

परास्नातक–चतुर्थ सत्रार्द्ध

त्रयोदश प्रश्नपत्र (क)–कुमाउनी साहित्य

1. विद्यार्थी कुमाउनी साहित्य के उद्‌भव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'पछ्याण' और 'इजा' नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'मन्याडर' पुस्तक के अध्ययन से कुमाउनी कहानी के कथ्य एवं शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठय्क्रम में सम्मिलित पुस्तक 'मन्खि' के अध्ययन से कुमाउनी निबन्ध का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक 'आपण पन्यार' के अध्ययन से कुमाउनी नाटक के रचनात्मक एवं शिल्पगत सौष्ठव से परिचित होता है।

चतुर्दश प्रश्नपत्र (क)– लोक साहित्य

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के अध्ययन से लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्संबन्धों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी लोक साहित्य के अध्ययन की प्रक्रिया एवं संकलन में आने वाली समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों एवं उनकी विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत प्रकीर्ण साहित्य का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

पंचदश प्रश्नपत्र (घ) विशिष्ट अध्ययन : सूरदास

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित सूरदास के पदों के अध्ययन से सूर के वात्सल्य वर्णन से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी सूर के पदों के अध्ययन से सूर की श्रृंगारिकता एवं भक्ति भावना का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

5. विद्यार्थी सूरदास के पदों के अध्ययन से पुष्टिमार्ग की मूलभूत अवधारणा से अवगत होता है।

मौखिकी

1. विद्यार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।
2. विद्यार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।
5. मौखिकी परीक्षा के माध्यम विद्यार्थी में वार्तालाप करने की क्षमता विकसित होती है।

शोध कार्य पी–एच.डी. हिंदी

5. शोधार्थी अपनी पूर्ण अकादमिक योग्यताओं के साथ उच्च स्तरीय शोध करने का अवसर प्राप्त करता है।
6. शोधार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
7. शोधार्थी व्याख्यात्मक शोध, क्षेत्रीय भाषाओं, साहित्य, साहित्येतिहास, ऐतिहासिक पुनर्लेखन एवं तुलनात्मक शोध का सैद्धातिंक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।
8. शोधार्थी अपने क्षेत्र, समाज और राष्ट्रहित में उच्चकोटि एवं उद्देश्यपूर्ण शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

वर्ष 2020–21

स्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम छः सत्रार्ध में विभाजित है जिसमें प्रत्येक सत्रार्ध में दो प्रश्नपत्र हैं
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 75 अंक का है जिसमें से 55 अंक लिखित परीक्षा एवं 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 33 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 54 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 13 प्रतिशत (जिसमें दो लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- सत्र् 2019–20 से हिंदी भाषा में प्रथम सत्रार्ध में प्रथम प्रश्नपत्र एवं द्वितीय सत्रार्ध में द्वितीय प्रश्नपत्र निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्नपत्र का अधिकतम अंक 70 है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

स्नातक पाठ्यक्रम (बी.ए.)–हिन्दी भाषा

1. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यवहारिक पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
2. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति जैसे राष्ट्रभाषा व राजभाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
3. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी संपर्क भाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
4. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के कार्यालयी व्यवहार व प्रयोग में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
5. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग की परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिंदी भाषा की आधारभूत व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–प्रथम प्रश्न–पत्र

1. विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिंदी की वाक्य संरचना एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक–प्रति पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा– द्वितीय प्रश्न–पत्र

1. हिंदी भाषा के उद्भव एवं विकास की विस्तृत और समृद्ध परम्परा का ज्ञान होता है।

2. हिन्दी की विभिन्न शैलियों हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होता है जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के काम आता है।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है जिससे वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है।
4. कम्प्यूटर व इण्टरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरम्भिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा का ज्ञान होने से सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता से कर सकता है।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक (बी.ए.)

1. साहित्य मानव समाज की भावनात्मक एवं संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य मानव जीवन की उत्कृष्ट कला होने के कारण समाज का दर्पण कहलाता है। स्नातक स्तर पर साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखण्ड की विसंगतियों एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है जिससे समाज में सुधार आता है।
3. हिन्दी साहित्य के अध्ययन से हिन्दी के समृद्ध साहित्य का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उनमें हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होकर रचनात्मक कौशल का विकास होता है।
5. विद्यार्थी जीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
6. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक स्तर की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी विषय को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने में सफलता प्राप्त होती है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

प्रथम प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की आदिकालीन कविता का ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवि चंदवरदाई, जायसी, तुलसी, सूरदास के व्यक्तित्व–कृतित्व एवं उनकी शिल्पगत विशेषताओं से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी वीरगाथा काव्य का परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी निर्गुण काव्यधारा और संत साहित्य से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा और उसकी दो प्रमुख शाखाओं रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति शाखा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

द्वितीय प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा साहित्य

1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा से परिचित होता है।

2. विद्यार्थी हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

3. विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा के मूलभूत तत्वों, विशेषताओं और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से कहानी के तत्वों और उसकी समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

तृतीय प्रश्नपत्र– रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन काव्य के भाव पक्ष एवं कला पक्ष से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत शब्दशक्तियों के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

चतुर्थ प्रश्नपत्र–नाटक एवं एकांकी

1. विद्यार्थी नाटक विधा के उद्‌भव ओर विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी नाटक के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित नाटक के आधार पर नाटक की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित एकांकियों के आधार पर एकांकी की तात्विक समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी एकांकी विधा के उद्‌भव और विकास, उसके स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध

पंचम् प्रश्नपत्र–द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी के द्विवेदीयुगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की छायावादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

4. पाठ्यक्रम में संकलित छायावादी कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध

षष्ठ प्रश्नपत्र– हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्ध

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध के विभिन्न तत्वों एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध की विभिन्न शैलियों से अवगत होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धकारों के निबन्धों के अध्ययन से उनकी निबन्ध कला से परिचित होता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध

सप्तम् प्रश्नपत्र–छायावादोत्तर हिन्दी कविता

1. विद्यार्थी प्रगतिवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रयोगवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी नई कविता के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं के अध्ययन से छायावादोत्तर कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध

अष्टम् प्रश्नपत्र–स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप और उसकी विभिन्न विधाओं से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी रेखाचित्र और संस्मरण के मूलभूत अन्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।

5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के उद्‌भव से वर्तमान तक की विकास यात्रा से परिचित होता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
नवम् प्रश्नपत्र–प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पत्राचार का ज्ञान प्राप्त कर कार्यालयी एवं व्यावसायिक पत्र लेखन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी प्रारूपण और टिप्पण का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी संक्षेपण और पल्लवन के नियमों और उनके मध्य मूलभूत अंतर से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी भाषा की कम्प्यूटिंग, टाइपिंग, फॉण्ट प्रबन्धन, डाटा प्रोसेसिंग और वर्ड प्रोसेसिंग का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी मीडिया, रेडियो, टी.वी., इण्टरनेट आदि के क्षेत्र में लेखन और सम्पादन संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
दशम् प्रश्नपत्र– लोकसाहित्य

1. विद्यार्थी साहित्य के मौखिक/अलिखित स्वरूप (लोक पक्ष) की मूलभूत जानकारी प्राप्त करते हैं। साथ ही लोकसाहित्य के विभिन्न तत्वों से परिचित होते हैं।
2. विद्यार्थी लोकसाहित्य के विविध आयामों, अध्ययन की विविध प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
3. विद्यार्थी लोक संस्कृति के अंतर्गत लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा और लोकगाथा से सम्बद्ध विभिन्न प्रचलित–अप्रचलित स्वरूपों, उनकी विशिष्टताओं एवं मूलभूत अंतर से परिचित होकर उनके प्रति जागरुकता एवं अभिरुचि उत्पन्न करते हैं।
4. विद्यार्थी लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के संरक्षण हेतु प्रयासरत होते हैं।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध
एकादश प्रश्नपत्र–हिन्दी पत्रकारिता

1. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. विद्यार्थी को सम्पादन कला के विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त होती है।
5. विद्यार्थी पत्रकारिता से जुड़ी विभिन्न लेखन प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

6. विद्यार्थी प्रेस संबंधी विभिन्न कानूनों, आचार संहिताओं तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता के दायित्वों का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध

द्वादश प्रश्नपत्र–उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य

1. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की समृद्धि में उत्तराखण्ड के कवियों एवं लेखकों के योगदान से परिचित होते हैं।
3. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
4. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों की विषयगत विविधता और शिल्पगत विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वर्ष 2020–21

परास्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग कुमाँऊ विश्वविद्यालय नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम चार सत्रार्ध में विभाजित है जिनमें से तीन सत्रार्ध में चार प्रश्नपत्र हैं चतुर्थ सत्रार्ध में तीन प्रश्नपत्र एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र मौखिकी परीक्षा पर आधारित है।
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 100 अंक का है जिसमें से 75 अंक लिखित परीक्षा एवं 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 20 प्रतिशत (जिसमें तीन लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcome)

हिन्दी

परास्नातक (एम.ए.)

1. साहित्य मानव जीवन एवं समाज से संबंधित जीवनपर्यन्त घटित होने वाले घटनाचक्रों का एक व्यापक स्त्रोत है। साहित्य समाज को दिशा एवं गति देने का कार्य सजीवता के साथ करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करके अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक एवं सामाजिक गत्यात्मकता को सरलता से पहचानने में सफल होता है।
2. हिन्दी साहित्य अपने प्रारम्भिक काल से भारत के इतिहास में मुस्लिमों के आगमन, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण–सगुण, रीतिकाल, श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक विद्यार्थी इस सुदीर्घ परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. साहित्य समाज का दर्पण है। जहां दर्पण केवल मानव की वाह्य विकृतियां दिखाता है, वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियां और विशेषताओं को चिन्हित करता है। साहित्य सभी बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करके स्वस्थ, सुंदर और आनन्दमयी जीवन की सृष्टि करता है।
4. वर्तमान भौतिकवादी जगत में गिरते हुए जीवन मूल्यों से समाज में जो विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं, साहित्य उन विसंगतियों को दूर करके समाज को सही दिशा देने का कार्य करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर समुन्नत जीवन मूल्यों को आत्मसात कर अपने भावी जीवन का विकास करता है।
5. विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति, परम्पराओं व सामाजिक मूल्यों से परिचित होते है। प्रौद्योगिकी के दौर में साहित्य ही हमें संवेदनशील बना सकता है। आज के मशीनी युग में साहित्य ही हमारे जीवन में मानवीय संवेदनाओं का प्रसार करता है।
6. विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी के अध्ययन से उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए नवीन विचार एवं परिकल्पनाएं प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

परास्नातक हिन्दी–प्रथम सत्रार्द्ध
प्रथम प्रश्नपत्र–आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

1. विद्यार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति 'संदेश रासक' के अध्ययन से आदिकालीन हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराजरासो' के अध्ययन से वीरगाथा काव्य परम्परा के उत्कर्ष रूप से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से हिन्दी की गीतिकाव्य परम्परा और उनकी भक्तिभावना से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कबीर वाणी' का अध्ययन करके कबीर के काव्य सौष्ठव एवं निर्गुण काव्यधारा की सन्त शाखा से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' का अध्ययन करके भक्तिकाव्य में सूफी काव्यधारा का ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और उनकी सौन्दर्य–दृष्टि का ज्ञान प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रश्नपत्र – सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी सगुण काव्यधारा एवं रीतिकालीन काव्यधारा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी सूरदास एवं तुलसीदास की रचनाओं का अध्ययन करके कृष्ण काव्यधारा एवं राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से रीतिकाल की रीतिसिद्ध काव्य परम्परा और उनकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी घनानन्द के काव्य के अध्ययन से घनानन्द के काव्य सौष्ठव के साथ–साथ रीतिमुक्त काव्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।

तृतीय प्रश्नपत्र– भारतीय काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र सम्बन्धी प्रचलित भारतीय अवधारणाओं/मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेदों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।

3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य में प्रचलित विभिन्न काव्य सम्प्रदायों एवं उनकी मान्यताओं से अवगत होता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी आलोचना से संबन्धित विभिन्न प्रतिमानों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर प्रमुख आलोचकों एवं उनके कार्य का साक्षात्कार करता है।
5. विद्यार्थी आलोचना के प्रमुख तत्वों तथा आलोचना से समालोचना तक की यात्रा से परिचित होता है।

चतुर्थ प्रश्नपत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास से परिचित होने के साथ–साथ हिन्दी में इतिहास लेखन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी काल विभाजन की प्रक्रिया तथा स्वरूप से परिचित होकर हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रदत्त काल विभाजन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर आदिकालीन कविता के नामकरण का भी अध्ययन करता है।
4. विद्यार्थी आदिकालीन सिद्ध एवं नाथ साहित्य परम्परा एवं स्वरूप से परिचित होकर आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी आदिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत होता है।
6. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल/रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

परास्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

पंचम् प्रश्नपत्र–आधुनिक हिन्दी काव्यः छायावाद तक

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी रत्नाकर के काव्य के अध्ययन से भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के स्वरूप एवं रत्नाकर के काव्य सौष्ठव से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नवजागरण काल में खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना के प्रयोग से परिचित होता है।

4. विद्यार्थी गुप्त कृत 'साकेत' के अध्ययन से रामकथा में उपेक्षित नारी पात्रों से परिचित होता है। साथ ही वह स्त्री के संघर्षों, त्याग और बलिदानों से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त एवं महादेवी वर्मा की कविताओं के अध्ययन से छायावादी काव्यगत प्रवृत्तियों से अवगत होता है।

षष्ठ प्रश्नपत्र – पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाओं एवं मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी प्लेटो की काव्य विषयक मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी अरस्तू की त्रासदी विषयक अवधारणा, अनुकरण एवं विरेचन सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी मैथ्यू आर्नल्ड के कला और नैतिकता के सिद्धान्त तथा क्रोंचे के अभिव्यंजनावादी सिद्धान्त से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी आई0ए0रिचर्ड्स के संप्रेषणीयता के सिद्धांत एवं टी0एस0इलियट के कला की निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त से परिचित होता है।
6. विद्यार्थी अंग्रेजी के कवि वर्ड्सवर्थ के काव्य भाषा के सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना के सिद्धान्त का परिचय प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाराओं–स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तरआधुनिकतावाद का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

सप्तम् प्रश्नपत्र– हिन्दी साहित्य का इतिहासः आधुनिक काल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आधुनिक काल के अंतर्गत साहित्य के विभिन्न आंदोलनों यथा–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद द्वारा समय–समय पर हिन्दी कविता के परिवर्तित स्वरूपों से परिचित होता है। साथ ही विषयगत एवं संरचनागत परिवर्तनों का भी ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आधुनिककालीन विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं से अवगत होता है।

4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत गद्य साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न गद्य विधाओं यथा– कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आदि का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं यथा– संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृतान्त, फीचर, डायरी, रिपार्ताज आदि का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

अष्टम् प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य

1. विद्यार्थी हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास, कहानी) एवं नाटक साहित्य के उद्‌भव और विकास यात्रा से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी कथा एवं नाटक साहित्य के विभिन्न तत्वों और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी 'गोदान' उपन्यास के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक जीवन की विषमताओं, भारतीय कृषक की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी सामाजिक शोषकों द्वारा किए गए अत्याचारों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कगार की आग' उपन्यास के अध्ययन से पहाड़ की दलित, शोषित महिलाओं पर होने वाले शोषण और दुर्व्यवहार और उनकी आंतरिक और बाह्य पीड़ाओं से परिचित होते हैं।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी की विकास यात्रा एवं उसके शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी पाठय्क्रम में संकलित नाटक 'स्कंदगुप्त' तथा 'लहरों के राजहंस' के अध्ययन से रंगमंच विधा एवं नाट्य परम्परा के विकास से परिचित होता है।

परास्नातक – तृतीय सत्रार्द्ध

नवम् प्रश्नपत्र – आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर

1. विद्यार्थी 'उर्वशी' काव्य के अध्ययन से दिनकर की रचनाधर्मिता का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रचीन कथानक के माध्यम से नारी की दुविधाग्रस्त चेतना एवं भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है।

3. विद्यार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिवादी काव्यधारा से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता का ज्ञान प्राप्त करता है।

दशम् प्रश्नपत्र – भाषा विज्ञान

1. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अध्ययन से भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा–व्यवस्था, भाषा–व्यवहार के महत्व एवं परिचय का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की प्रमुख शाखाओं स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी भाषा की विशेषताओं और भाषाविज्ञान के क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी भाषा विज्ञान के अध्ययन से साहित्य में भाषा विज्ञान की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

एकादश प्रश्नपत्र–निबन्ध एवं स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव एवं विकास से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धों के अध्ययन से प्रमुख निबन्धकारों के परिचय एवं उनकी गद्य शैली से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप एवं उसके उद्‌भव–विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय एवं उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं से अवगत होता है।

द्वादश प्रश्नपत्र– हिन्दी भाषा

1. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाओं और बोलियों से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी के भाषिक स्वरूप यथा – शब्द रचना, रूप रचना, वाक्य रचना, पद क्रम और अन्विति का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और वर्तमान विश्व में हिन्दी के महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।

5. विद्यार्थी कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की तकनीकी जानकारी प्राप्त करता है।

परास्नातक–चतुर्थ सत्रार्द्ध

त्रयोदश प्रश्नपत्र (क)–कुमाउनी साहित्य

1. विद्यार्थी कुमाउनी साहित्य के उद्‌भव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'पछ्याण' और 'इजा' नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'मन्याडर' पुस्तक के अध्ययन से कुमाउनी कहानी के कथ्य एवं शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठय्क्रम में सम्मिलित पुस्तक 'मन्खि' के अध्ययन से कुमाउनी निबन्ध का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक 'आपण पन्यार' के अध्ययन से कुमाउनी नाटक के रचनात्मक एवं शिल्पगत सौष्ठव से परिचित होता है।

चतुर्दश प्रश्नपत्र (क)– लोक साहित्य

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के अध्ययन से लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्संबन्धों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी लोक साहित्य के अध्ययन की प्रकिया एवं संकलन में आने वाली समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों एवं उनकी विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत प्रकीर्ण साहित्य का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

पंचदश प्रश्नपत्र (घ)– विशिष्ट अध्ययन : सूरदास

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित सूरदास के पदों के अध्ययन से सूर के वात्सल्य वर्णन से परिचित होता है।

4. विद्यार्थी सूर के पदों के अध्ययन से सूर की श्रृंगारिकता एवं भक्ति भावना का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी सूरदास के पदों के अध्ययन से पुष्टिमार्ग की मूलभूत अवधारणा से अवगत होता है।

मौखिकी

1. विद्यार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।
2. विद्यार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

शोध कार्य पी–एच.डी. हिंदी

1. शोधार्थी अपनी पूर्ण अकादमिक योग्यताओं के साथ उच्च स्तरीय शोध करने का अवसर प्राप्त करता है।
2. शोधार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. शोधार्थी व्याख्यात्मक शोध, क्षेत्रीय भाषाओं, साहित्य, साहित्येतिहास, ऐतिहासिक पुनर्लेखन एवं तुलनात्मक शोध का सैद्धातिंक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शोधार्थी अपने क्षेत्र, समाज और राष्ट्र हित में उच्चकोटि एवं उद्देश्यपूर्ण शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

वर्ष 2021–22

स्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम छः सत्रार्ध में विभाजित है जिसमें प्रत्येक सत्रार्ध में दो प्रश्नपत्र हैं
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 75 अंक का है जिसमें से 55 अंक लिखित परीक्षा एवं 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 33 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 54 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 13 प्रतिशत (जिसमें दो लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है। हिंदी भाषा में
- सत्र् 2019–20 से हिंदी भाषा में प्रथम सत्रार्ध में प्रथम प्रश्नपत्र एवं द्वितीय सत्रार्ध में द्वितीय प्रश्नपत्र निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्नपत्र का अधिकतम अंक 70 है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

स्नातक पाठ्यक्रम (बी.ए.)–हिन्दी भाषा

1. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यवहारिक पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
2. आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति जैसे राष्ट्रभाषा व राजभाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
3. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी संपर्क भाषा संबंधी पक्ष में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।

4. आधार पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के कार्यालयी व्यवहार व प्रयोग में विशेषज्ञता प्राप्त करता है।
5. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग की परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिंदी भाषा की आधारभूत व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–प्रथम प्रश्न–पत्र

1. विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतु हिंदी की वाक्यसंरचना एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक–प्रति पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–द्वितीय प्रश्नपत्र

1. हिंदी भाषा के उद्‌भव एवं विकास की विस्तृत और समृद्ध परम्परा का ज्ञान होता है।
2. हिन्दी की विभिन्न शैलियों हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होता है जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के काम आता है।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है जिससे वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है।
4. कम्प्यूटर व इण्टरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरम्भिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा का ज्ञान होने से सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता से कर सकता है।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

कार्यक्रम परिणाम (Programme outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक (बी.ए.)

1. साहित्य मानव समाज की भावनात्मक एवं संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य मानव जीवन की उत्कृष्ट कला होने के कारण समाज का दर्पण कहलाता है। स्नातक स्तर पर साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखण्ड की विसंगतियों एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है जिससे समाज में सुधार आता है।
3. हिन्दी साहित्य के अध्ययन से हिन्दी के समृद्ध साहित्य का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उनमें हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होकर रचनात्मक कौशल का विकास होता है।
5. विद्यार्थी जीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
6. संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक स्तर की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी विषय को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने में सफलता प्राप्त होती है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

हिन्दी साहित्य

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

प्रथम प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की आदिकालीन कविता का ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवि चंदवरदाई, जायसी, तुलसी, सूरदास के व्यक्तित्व–कृतित्व एवं उनकी शिल्पगत विशेषताओं से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी वीरगाथा काव्य का परिचय प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी निर्गुण काव्यधारा और संत साहित्य से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा और उसकी दो प्रमुख शाखाओं रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति शाखा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

स्नातक प्रथम सत्रार्द्ध

द्वितीय प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा साहित्य

1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा से परिचित होता है।

2. विद्यार्थी हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा के मूलभूत तत्वों, विशेषताओं और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।
6. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से कहानी के तत्वों और उसकी समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

हिंदी भाषा–द्वितीय प्रश्नपत्र

1. हिंदी भाषा के उद्‌भव एवं विकास की विस्तृत और समृद्ध परम्परा का ज्ञान होता है।
2. हिन्दी की विभिन्न शैलियों हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होता है जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के काम आता है।
3. हिन्दी की बोलियों का ज्ञान होता है जिससे वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है।
4. कम्प्यूटर व इण्टरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरम्भिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. राष्ट्रभाषा व सम्पर्क भाषा का ज्ञान होने से सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता से कर सकता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

तृतीय प्रश्नपत्र– रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन काव्य के भाव पक्ष एवं कला पक्ष से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी काव्यांग के अंतर्गत शब्दशक्तियों के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध

चतुर्थ प्रश्नपत्र–नाटक एवं एकांकी

1. विद्यार्थी नाटक विधा के उद्‌भव ओर विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी नाटक के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित नाटक के आधार पर नाटक की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित एकांकियों के आधार पर एकांकी की तात्विक समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी एकांकी विधा के उद्‌भव और विकास, उसके स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
पंचम् प्रश्नपत्र–द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य

1. विद्यार्थी हिन्दी के द्विवेदीयुगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की छायावादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

4. पाठ्यक्रम में संकलित छायावादी कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप और उसके शिल्पगत सौन्दर्य से परिचित होता है।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध
षष्ठ प्रश्नपत्र– हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्ध

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध के विभिन्न तत्वों एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी निबन्ध की विभिन्न शैलियों से अवगत होता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धकारों के निबन्धों के अध्ययन से उनकी निबन्ध कला से परिचित होता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
सप्तम् प्रश्नपत्र–छायावादोत्तर हिन्दी कविता

1. विद्यार्थी प्रगतिवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रयोगवादी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी नई कविता के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं के अध्ययन से छायावादोत्तर कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक चतुर्थ सत्रार्द्ध
अष्टम् प्रश्नपत्र–स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप और उसकी विभिन्न विधाओं से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. विद्यार्थी रेखाचित्र और संस्मरण के मूलभूत अन्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के उद्‌भव से वर्तमान तक की विकास यात्रा से परिचित होता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
नवम् प्रश्नपत्र–प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पत्राचार का ज्ञान प्राप्त कर कार्यालयी एवं व्यावसायिक पत्र लेखन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी प्रारूपण और टिप्पण का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी संक्षेपण और पल्लवन के नियमों और उनके मध्य मूलभूत अंतर से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी भाषा की कम्प्यूटिंग, टाइपिंग, फॉण्ट प्रबन्धन, डाटा प्रोसेसिंग और वर्ड प्रोसेसिंग का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी मीडिया, रेडियो, टी.वी., इण्टरनेट आदि के क्षेत्र में लेखन और सम्पादन संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है।

स्नातक पंचम् सत्रार्द्ध
दशम् प्रश्नपत्र– लोकसाहित्य

1. विद्यार्थी साहित्य के मौखिक/अलिखित स्वरूप (लोक पक्ष) की मूलभूत जानकारी प्राप्त करते हैं। साथ ही लोकसाहित्य के विभिन्न तत्वों से परिचित होते हैं।
2. विद्यार्थी लोकसाहित्य के विविध आयामों, अध्ययन की विविध प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
3. विद्यार्थी लोक संस्कृति के अंतर्गत लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा और लोकगाथा से सम्बद्ध विभिन्न प्रचलित–अप्रचलित स्वरूपों, उनकी विशिष्टताओं एवं मूलभूत अंतर से परिचित होकर उनके प्रति जागरुकता एवं अभिरुचि उत्पन्न करते हैं।
4. विद्यार्थी लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के संरक्षण हेतु प्रयासरत होते हैं।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध
एकादश प्रश्नपत्र–हिन्दी पत्रकारिता

1. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के स्वरूप और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. विद्यार्थियों को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. विद्यार्थी को सम्पादन कला के विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त होती है।
5. विद्यार्थी पत्रकारिता से जुड़ी विभिन्न लेखन प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी प्रेस संबंधी विभिन्न कानूनों, आचार संहिताओं तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता के दायित्वों का ज्ञान प्राप्त करते है।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध
द्वादश प्रश्नपत्र–उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य

1. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की समृद्धि में उत्तराखण्ड के कवियों एवं लेखकों के योगदान से परिचित होते हैं।
3. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
4. विद्यार्थी उत्तराखण्ड के कवियों, कहानीकारों और निबंधकारों की विषयगत विविधता और शिल्पगत विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वर्ष 2021–22

परास्नातक–हिंदी

स्व.श्री.जयदत्त वैला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत

हिंदी विभाग, कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

- संपूर्ण पाठ्यक्रम चार सत्रार्ध में विभाजित है जिनमें से तीन सत्रार्ध में चार प्रश्नपत्र हैं चतुर्थ सत्रार्ध में तीन प्रश्नपत्र एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र मौखिकी परीक्षा पर आधारित है।
- प्रत्येक सत्रार्ध में प्रश्नपत्र कुल 100 अंक का है जिसमें से 75 अंक लिखित परीक्षा एवं 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं (लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय कार्य अथवा दोनों)।
- प्रत्येक लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र के खंड 'अ' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (किन्हीं तीन अवतरणों की संसदर्भ व्याख्या) खंड 'ब' में कुल अंक का 40 प्रतिशत (जिसमें तीन विस्तृत प्रश्न) एवं खंड 'स' में कुल अंक का 20 प्रतिशत (जिसमें तीन लघु उत्तरीय प्रश्न) निर्धारित किया गया है।
- प्रश्नपत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करता है।
- परीक्षा अवधि कुल तीन घंटे की निर्धारित रहेगी।

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcome)

हिन्दी

परास्नातक (एम.ए.)

1. साहित्य मानव जीवन एवं समाज से संबंधित जीवनपर्यन्त घटित होने वाले घटनाचक्रों का एक व्यापक स्त्रोत है। साहित्य समाज को दिशा एवं गति देने का कार्य सजीवता के साथ करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करके अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक एवं सामाजिक गत्यात्मकता को सरलता से पहचानने में सफल होता है।
2. हिन्दी साहित्य अपने प्रारम्भिक काल से भारत के इतिहास में मुस्लिमों के आगमन, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण–सगुण, रीतिकाल, श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक विद्यार्थी इस सुदीर्घ परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. साहित्य समाज का दर्पण है। जहां दर्पण केवल मानव की वाह्य विकृतियां दिखाता है, वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियां और विशेषताओं को चिन्हित करता है। साहित्य सभी बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करके स्वस्थ, सुंदर और आनन्दमयी जीवन की सृष्टि करता है।
4. वर्तमान भौतिकवादी जगत में गिरते हुए जीवन मूल्यों से समाज में जो विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं, साहित्य उन विसंगतियों को दूर करके समाज को सही दिशा देने का कार्य करता है। विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर समुन्नत जीवन मूल्यों को आत्मसात कर अपने भावी जीवन का विकास करता है।
5. विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति, परम्पराओं व सामाजिक मूल्यों से परिचित होते है। प्रौद्योगिकी के दौर में साहित्य ही हमें संवेदनशील बना सकता है। आज के मशीनी युग में साहित्य ही हमारे जीवन में मानवीय संवेदनाओं का प्रसार करता है।
6. विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी के अध्ययन से उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए नवीन विचार एवं परिकल्पनाएं प्राप्त करता है।

विषय परिणाम (Course Outcome)

परास्नातक हिन्दी–प्रथम सत्रार्द्ध
प्रथम प्रश्नपत्र–आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

1. विद्यार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति 'संदेश रासक' के अध्ययन से आदिकालीन हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराजरासो' के अध्ययन से वीरगाथा काव्य परम्परा के उत्कर्ष रूप से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से हिन्दी की गीतिकाव्य परम्परा और उनकी भक्तिभावना से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कबीर वाणी' का अध्ययन करके कबीर के काव्य सौष्ठव एवं निर्गुण काव्यधारा की सन्त शाखा से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' का अध्ययन करके भक्तिकाव्य में सूफी काव्यधारा का ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और उनकी सौन्दर्य–दृष्टि का ज्ञान प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रश्नपत्र – सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

1. विद्यार्थी सगुण काव्यधारा एवं रीतिकालीन काव्यधारा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी सूरदास एवं तुलसीदास की रचनाओं का अध्ययन करके कृष्ण काव्यधारा एवं राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से रीतिकाल की रीतिसिद्ध काव्य परम्परा और उनकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी घनानन्द के काव्य के अध्ययन से घनानन्द के काव्य सौष्ठव के साथ–साथ रीतिमुक्त काव्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।

तृतीय प्रश्नपत्र– भारतीय काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी काव्यशास्त्र सम्बन्धी प्रचलित भारतीय अवधारणाओं/मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेदों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य में प्रचलित विभिन्न काव्य सम्प्रदायों एवं उनकी मान्यताओं से अवगत होता है।

4. विद्यार्थी हिन्दी आलोचना से संबन्धित विभिन्न प्रतिमानों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर प्रमुख आलोचकों एवं उनके कार्य का साक्षात्कार करता है।
5. विद्यार्थी आलोचना के प्रमुख तत्वों तथा आलोचना से समालोचना तक की यात्रा से परिचित होता है।

चतुर्थ प्रश्नपत्र– हिन्दी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास से परिचित होने के साथ–साथ हिन्दी में इतिहास लेखन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी काल विभाजन की प्रक्रिया तथा स्वरूप से परिचित होकर हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रदत्त काल विभाजन का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर आदिकालीन कविता के नामकरण का भी अध्ययन करता है।
4. विद्यार्थी आदिकालीन सिद्ध एवं नाथ साहित्य परम्परा एवं स्वरूप से परिचित होकर आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी आदिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत होता है।
6. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल/रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करता है।

परास्नातक द्वितीय सत्रार्द्ध
पंचम् प्रश्नपत्र–आधुनिक हिन्दी काव्यः छायावाद तक

1. विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी रत्नाकर के काव्य के अध्ययन से भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के स्वरूप एवं रत्नाकर के काव्य सौष्ठव से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नवजागरण काल में खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना के प्रयोग से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी गुप्त कृत 'साकेत' के अध्ययन से रामकथा में उपेक्षित नारी पात्रों से परिचित होता है। साथ ही वह स्त्री के संघर्षों, त्याग और बलिदानों से परिचित होता है।

5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त एवं महादेवी वर्मा की कविताओं के अध्ययन से छायावादी काव्यगत प्रवृत्तियों से अवगत होता है।

षष्ठ प्रश्नपत्र –पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाओं एवं मतों से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी प्लेटो की काव्य विषयक मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी अरस्तू की त्रासदी विषयक अवधारणा, अनुकरण एवं विरेचन सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी मैथ्यू आर्नल्ड के कला और नैतिकता के सिद्धान्त तथा क्रोंचे के अभिव्यंजनावादी सिद्धान्त से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी आई0ए0रिचर्ड्स के संप्रेषणीयता के सिद्धांत एवं टी0एस0इलियट के कला की निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त से परिचित होता है।
6. विद्यार्थी अंग्रेजी के कवि वर्ड्सवर्थ के काव्य भाषा के सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना के सिद्धान्त का परिचय प्राप्त करता है।
7. विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाराओं–स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तरआधुनिकतावाद का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

सप्तम् प्रश्नपत्र– हिन्दी साहित्य का इतिहासः आधुनिक काल

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी आधुनिक काल के अंतर्गत साहित्य के विभिन्न आंदोलनों यथा–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद द्वारा समय–समय पर हिन्दी कविता के परिवर्तित स्वरूपों से परिचित होता है। साथ ही विषयगत एवं संरचनागत परिवर्तनों का भी ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी आधुनिककालीन विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं से अवगत होता है।
4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत गद्य साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न गद्य विधाओं यथा– कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आदि का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

5. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं यथा– संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृतान्त, फीचर, डायरी, रिपार्ताज आदि का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

अष्टम् प्रश्नपत्र– हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य

1. विद्यार्थी हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास, कहानी) एवं नाटक साहित्य के उद्‌भव और विकास यात्रा से परिचित होता है।
2. विद्यार्थी कथा एवं नाटक साहित्य के विभिन्न तत्वों और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी 'गोदान' उपन्यास के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक जीवन की विषमताओं, भारतीय कृषक की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी सामाजिक शोषकों द्वारा किए गए अत्याचारों से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी 'कगार की आग' उपन्यास के अध्ययन से पहाड़ की दलित, शोषित महिलाओं पर होने वाले शोषण और दुर्व्यवहार और उनकी आंतरिक और बाह्य पीड़ाओं से परिचित होते हैं।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी की विकास यात्रा एवं उसके शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. विद्यार्थी पाठय्क्रम में संकलित नाटक 'स्कंदगुप्त' तथा 'लहरों के राजहंस' के अध्ययन से रंगमंच विधा एवं नाट्य परम्परा के विकास से परिचित होता है।

परास्नातक – तृतीय सत्रार्द्ध

नवम् प्रश्नपत्र – आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर

1. विद्यार्थी 'उर्वशी' काव्य के अध्ययन से दिनकर की रचनाधर्मिता का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी प्रचीन कथानक के माध्यम से नारी की दुविधाग्रस्त चेतना एवं भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिवादी काव्यधारा से परिचित होता है।

4. विद्यार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता का ज्ञान प्राप्त करता है।

दशम् प्रश्नपत्र – भाषा विज्ञान

1. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अध्ययन से भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा–व्यवस्था, भाषा–व्यवहार के महत्व एवं परिचय का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी भाषाविज्ञान की प्रमुख शाखाओं स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी भाषा की विशेषताओं और भाषाविज्ञान के क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी भाषा विज्ञान के अध्ययन से साहित्य में भाषा विज्ञान की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

एकादश प्रश्नपत्र–निबन्ध एवं स्मारक साहित्य

1. विद्यार्थी निबन्ध विधा के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी निबन्ध विधा के उद्‌भव एवं विकास से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित निबन्धों के अध्ययन से प्रमुख निबन्धकारों के परिचय एवं उनकी गद्य शैली से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप एवं उसके उद्‌भव–विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी स्मारक साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय एवं उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं से अवगत होता है।

द्वादश प्रश्नपत्र– हिन्दी भाषा

1. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी हिन्दी की प्रमुख उपभाषाओं और बोलियों से परिचित होता है।
3. विद्यार्थी हिन्दी के भाषिक स्वरूप यथा – शब्द रचना, रूप रचना, वाक्य रचना, पद क्रम और अन्विति का ज्ञान प्राप्त करता है।

4. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और वर्तमान विश्व में हिन्दी के महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की तकनीकी जानकारी प्राप्त करता है।

परास्नातक–चतुर्थ सत्रार्द्ध

त्रयोदश प्रश्नपत्र (क)–कुमाउनी साहित्य

1. विद्यार्थी कुमाउनी साहित्य के उद्‌भव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'पछ्याण' और 'इजा' नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता के भावगत एवं शिल्पगत सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित 'मन्याडर' पुस्तक के अध्ययन से कुमाउनी कहानी के कथ्य एवं शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी पाठय्क्रम में सम्मिलित पुस्तक 'मन्खि' के अध्ययन से कुमाउनी निबन्ध का आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक 'आपण पन्यार' के अध्ययन से कुमाउनी नाटक के रचनात्मक एवं शिल्पगत सौष्ठव से परिचित होता है।

चतुर्दश प्रश्नपत्र (क)– लोक साहित्य

1. विद्यार्थी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के अध्ययन से लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. विद्यार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्संबन्धों का परिचय प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी लोक साहित्य के अध्ययन की प्रक्रिया एवं संकलन में आने वाली समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों एवं उनकी विशेषताओं से परिचित होता है।
5. विद्यार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत प्रकीर्ण साहित्य का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

पंचदश प्रश्नपत्र (घ)– विशिष्ट अध्ययन : सूरदास

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

2. विद्यार्थी भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी पाठ्यक्रम में संकलित सूरदास के पदों के अध्ययन से सूर के वात्सल्य वर्णन से परिचित होता है।
4. विद्यार्थी सूर के पदों के अध्ययन से सूर की श्रृंगारिकता एवं भक्ति भावना का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. विद्यार्थी सूरदास के पदों के अध्ययन से पुष्टिमार्ग की मूलभूत अवधारणा से अवगत होता है।

मौखिकी

1. विद्यार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।
2. विद्यार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. विद्यार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।
4. विद्यार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

शोध कार्य पी–एच.डी. हिंदी

1. शोधार्थी अपनी पूर्ण अकादमिक योग्यताओं के साथ उच्च स्तरीय शोध करने का अवसर प्राप्त करता है।
2. शोधार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. शोधार्थी व्याख्यात्मक शोध, क्षेत्रीय भाषाओं, साहित्य, साहित्येतिहास, ऐतिहासिक पुनर्लेखन एवं तुलनात्मक शोध का सैद्धातिंक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शोधार्थी अपने क्षेत्र, समाज और राष्ट्र हित में उच्चकोटि एवं उद्देश्यपूर्ण शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।